भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?

गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

1. (क) निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

हमारे हिन्दुस्तानी लोग तो रेल की गाड़ी हैं। यद्यपि फर्स्ट क्लास, सेकेण्ड क्लास आदि गाड़ी बहुत अच्छी-अच्छी और बड़े-बड़े महसूल की ट्रेन इसमें लगी हैं, पर बिना इंजन सब नहीं चल सकतीं, वैसे ही हिन्दुस्तानी लोगों को कोई चलानेवाला हो तो ये क्या नहीं कर सकते। इनसे इतना कह दीजिए का चुप साधि रहा बलवाना' फिर देखिए हनुमान जी को अपना बल कैसे याद आता है। सो बल कौन याद दिलावे।

प्रश्नोत्तर-

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- पाठ का नाम - भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?

लेखक का नाम – भारतेंदु हरिश्चंद

(ii) प्रस्तुत गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

हमारे देश के लोगों को लगाड़ी की संज्ञा दी जा सकती है। जैसे रेलगाड़ी में ऊँचे किराये तथा सामान्य किराये के डिब्बे लगे रहते हैं, परन्तु इंजन के अभाव में वे सभी अपनी जगह स्थिर रहते हैं, आगे नहीं बढ़ पाते; उसी प्रकार भारत के लोगों में भी उच्च और मध्यम श्रेणी के विद्वान्, वीर एवं शक्ति-सम्पन्न सभी प्रकार की प्रतिभाओं से सम्पन्न लोग हैं, परन्तु नेतृत्वहीनता के कारण वे अपनी उन्नति के लिए स्वयं कोई भी कार्य नहीं कर पाते।

(iii) लेखक ने हिन्दुस्तानियों को किसके सदृश बताया है?

उत्तर – लेखक ने हिन्दुस्तानियों को रेलगाड़ी के सदृश बताया है।

(iv) 'का चुप साधि रहा बलवाना' इस कथन से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर – लेखक का आशय है कि देश के लोग हनुमान जी की तरह हैं। जामवंत ने जिस प्रकार हनुमान जी को उनकी शक्ति का स्मरण कराया और वे समुद्र लाँघ गए, उसी प्रकार भारत के लोगों को प्रेरणादायी, सफल नेतृत्व की आवश्यकता है।

(v) लेखक ने हनुमान जी को किसका प्रतीक बताया है?

उत्तर - हिन्दुस्तानी लोगों का प्रतिक बताया है ।

(ख) हम नहीं समझते कि इनको लाज भी क्यों नहीं आती कि उस समय में जबकि इनके पुरखों के पास कोई भी सामान नहीं था, तब उन लोगों ने जंगल में पत्ते और मिट्टी की कुटियों में बैठ करके बाँस की नालियों से जो ताराग्रह आदि बेध करके उनकी गति लिखी हैं वह ऐसी ठीक है कि सोलह लाख रुपये के लागत की विलायत में जो दूरबीन बनी है उनसे उन ग्रहों को वेध करने में भी वही गति ठीक आती है और जब आज इस काल में हम लोगों को अंगरेजी विद्या के और जनता की उन्नति से

लाखों पुस्तकें और हजारों यंत्र तैयार हैं तब हम लोग निरी चुंगी के कतवार फेंकने की नाड़ी बन रहे हैं। यह समय ऐसा है कि उन्नति की मानो घुड़दौड़ हो रही है। अमेरिकन, अँगरेज फरांसीस आदि तुरकी ताजी सब सरपट दौड़े जाते हैं। सबके जी में यही है कि पाला हमी पहले छू लें। उस समय हिन्दू काठियावाड़ी खाली खड़े-खड़े टाप से मिट्टी खोदते हैं। इनको, औरों को जाने दीजिए, जापानी टट्टुओं को हाँफते हुए दौड़ते देख करके भी लाज नहीं आती। यह समय ऐसा है कि जो पीछे रह जाएगा फिर कोटि उपाय किये भी आगे न बढ़ सकेगा। इस लूट में इस

बरसात में भी जिसके सिर पर कम्बख्ती का छाता और आँखों में मूर्खता की पट्टी बँधी रहे उन पर ईश्वर का कोप ही कहना चाहिए।

प्रश्नोत्तर-

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के गद्य खण्ड के भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है ? नामक पाठ से अवतरित है इसके लेखक भारतेंदु हरिश्चंद जी हैं।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- भारतवासियों को यह समझना चाहिए। कि ऐसे क्षणों में यदि वे एक बार पिछड़ जाएँगे तो फिर आगे नहीं बढ़ सकते। भारतेंदु जी कहते हैं कि जिस समय अमेरिकन अंगरेज फरासीस आदि तुरकी ताजी सब सरपट्ट दौड़े जाते हैं। उस समय भारतीय केवल व्यर्थ के कार्य आलस मे जुटे रहते हैं।

(iii) लेखक के अनुसार प्रतिस्पर्द्धा में भारतवासियों की असफलता का क्या कारण है?

उत्तर - आलस्य

(iv) प्राचीन काल में साधन के अभाव में भारतीयों ने किसकी खोज की?

उत्तर – ताराग्रह आदि की खोज की।

(v) आधुनिक समय में अपनी उन्नति के लिए कौन प्रयासरत है?

उत्तर – अमेरिकन, अंग्रेज, फ्रांसीसी, तुरकी आदि अपनी उन्नति के लिये प्रयासरत है।

(vi) प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक ने भारतवासियों को क्या सुझाव दिया है?

उत्तर – प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से भारतेन्दु जी ने भारतवासियों को सुझाव दिया है कि जब छोटे-छोटे देश भी अपने विकास में संलग्न हैं तब भारतवर्ष को भी अपनी उन्नति का पूरा प्रयास करना चाहिए।

(vii) " उस समय हिन्दू काठियावाडी खाली खड़े-खड़े टॉप से मिट्टी खोदते हैं" इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने कौन-सी बात कही है?

उत्तर – "उस समय हिन्दू काठियावाड़ी खाली खड़े-खड़े टाप से मिट्टी खोदते हैं।" पंक्ति के माध्यम से भारतेन्दु जी भारतीयों की अकर्मण्यता और उदासीन-प्रवृत्ति से क्षुब्ध होकर कहते हैं कि संसार के सभी छोटे-बड़े देश उन्नति की दौड़ में निरन्तर आगे बढ़ते जा रहे हैं और हम भारतवासी अपने स्थान पर खड़े-खड़े पैरों से मिट्टी खोद रहे हैं। अमेरिकन, अंग्रेज, फ्रांसीसी आदि तुर्की

घोड़ों की तरह तीव्र गति से प्रगति की दौड़ में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं, किन्तु भारत के लोग निरन्तर पिछड़ते जा रहे हैं। इनका मानसिक और सामाजिक स्तर जो वर्षों पहले था, वही अब भी है। ये आज भी कुरीतियों और अन्धविश्वासों में जकड़े हुए हैं, इसीलिए स्वावलम्बी नहीं हैं।

(ग) सब उन्नतियों का मूल धर्म है। इससे सबसे पहले धर्म की ही उन्नति करनी उचित है। देखो अंगरेजों की धर्मनीति राजनीति परस्पर मिली हैं इससे उनकी दिन दिन कैसी उन्नति है। उनको जाने दो, अपने ही यहाँ देखो तुम्हारे यहाँ धर्म की आड़ में

नाना प्रकार की नीति समाज गठन, वैद्यक आदि भरे हुए हैं। दो एक मिसाल सुनो। यहीं तुम्हारा बलिया का मेला और यहाँ स्थान क्यों बनाया गया है। जिसमें जो लोग कभी आपस में नहीं मिलते दस-दस पाँच-पाँच कोस मे वे लोग एक जगह एकत्र होकर आपस में मिलें। एक दूसरे का दुःख-सुख जानें गृहस्थी के काम की वह चीजें जो गाँव में नहीं मिलतीं यहाँ से ले जायें। एकादशी का व्रत क्यों रखा है? जिसमें महीने में दो एक उपवास से शरीर शुद्ध हो जाय। गंगा जी नहाने जाते हैं तो पहले पानी सिर पर चढ़ाकर तब पैर पर डालने का विधान

क्यों है? जिसमें तलुए से गरमी सिर में चढ़कर विकार न उत्पन्न करे। दीवाली इस हेतु है कि इसी बहाने साल भर में एक बेर तो सफाई हो जाये। होली इसी हेतु है कि वसंत की बिगड़ी हवा स्थान- स्थान पर अग्नि जलने से स्वच्छ हो जाय। यही तिहवार ही तुम्हारी म्युनिसिपालिटी है।

प्रश्नोत्तर-

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए। .

उत्तर– पाठ का नाम - भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है ?

लेखक का नाम – भारतेंदु हरिश्चंद

(ii) प्रस्तुत गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

भारतेंदु जी कहते हैं इस संसार में मनुष्यों की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक व मानसिक उन्नति के पीछे मूल कारण

धर्म है। जितनी भी उन्नतिया हैं वे सब धर्म के कारण ही हैं। अतः सबसे पहले हम सबको अपने धर्म की, उन्नति करनी चाहिए।

(iii) लेखक ने सभी उन्नतियों का मूल किसे बताया है?

उत्तर- लेखक ने सभी उन्नतियों का मूल धर्म को बताया है।

(iv) लेखक ने अंग्रेजों की उन्नति का क्या कारण बताया है?

उत्तर - धर्म को बताया है।

(v) 'यही तिहवार ही तुम्हारी म्युनिसिपालिटी है' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - जिस प्रकार म्युनिसिपालिटी तुम्हारे घर की गंदगी को बाहर निकाल देती है उसी प्रकार जब त्योहार आता है तो आम जन भी गंदगी को घर से बाहर निकाल देते हैं इसलिये लेखक ने कहा है-'यही तिहवार ही तुम्हारी म्युनिसिपालिटी है'

(घ) ये सब तो समाज धर्म हैं। जो देश काल के अनुसार शोधे और बदले जा सकते हैं। दूसरी खराबी यह हुई है कि उन्हीं महात्मा बुद्धिमान ऋषियों के वंश के लोगों ने अपने बाप दादों का मतलब न समझकर बहुत से नये-नये धर्म बनाकर शास्त्रों में घर दिये। बस सभी तिथि व्रत और सभी स्थान तीर्थ हो गये। सो इन बातों को अब एक बेर आँख खोलकर देख और समझ लीजिए कि फलानी बान उन बुद्धिमान ऋषियों ने क्यों बनायी और उनमें जो देश और काल के अनुकूल और उपकारी हों उनको ग्रहण कीजिए बहुत सी बातें जो समाज विरुद्ध मानी

जाती हैं किन्तु धर्मशास्त्रा में जिनका विधान है उनको चलाइए। जैसे जहाज का सफर, विधवा विवाह आदि। लड़कों को छोटेपन में ही ब्याह करके उनका बल, बीरज, आयुष्य सब मत घटाइए।

प्रश्नोत्तर-

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर– उपर्युक्त

(ii) आयुष्य का क्या अर्थ है?

उत्तर– आयु या उम्र।

(iii) 'सामाजिक धर्म' किसे कहा गया है?

उत्तर– जो देशकाल के अनुसार शोधे और बदले जा सकते हैं वे सब सामाजिक धर्म हैं।

(iv) लेखक किस बात को ग्रहण करने को कहता है?

उत्तर - लेखक के अनुसार जो देश और काल के अनुकूल और उपकारी हों उनको ग्रहण कीजिए।

* ||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् || *

(v) प्रस्तुत पंक्तियों में किन सामाजिक कुरीतियों को दूर करने को कहा गया है?

उत्तर- जैसे विधवा पुनर्विवाह न होना, बाल विवाह होना, शिक्षा न देना आदि सामाजिक कुरीतियों को दूर करने को कहा गया है

(ङ) हाय, अफसोस, तुम ऐसे हो गये कि अपने निज की काम की वस्तु भी नहीं बना सकते। भाइयों, अब तो नींद से चौंको, अपने देश की सब प्रकार से उन्नति करो। जिसमें तुम्हारी भलाई हो वैसी ही किताब पढ़ो, वैसे ही खेल खेलो, वैसी ही बातचीत करो।

परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो। अपने देश में अपनी भाषा में उन्नति करो।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर – पाठ का नाम - भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?

लेखक का नाम – भारतेंदु हरिश्चंद

(ii) प्रस्तुत गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर - भारतेंदु जी कहते हैं कि अफसोस तो इस बात का है कि हमारे हिंदुस्तानी लोग अपने काम की छोटी से छोटी वस्तु भी नहीं बना

सकते। भारतीयों को जगाते हुए कहते हैं कि अब नींद से जागो और अपनी तथा अपने देश की सांगोपांग उन्नति करो जिसमें तुम्हारी भलाई निहित हो वैसी ही किताबों का अध्ययन करो वैसे ही खेल को खेलो वैसी ही बातचीत करो तभी सब प्रकार से उन्नति हो सकती है।

(iii) लेखक ने किस बात पर अफसोस प्रकट किया है?

उत्तर- लेखक ने इस बात पर अफसोस प्रकट किया है कि हमारे हिंदुस्तानी लोग अपने काम की छोटी से छोटी वस्तु भी नहीं बना सकते।

(iv) लेखक ने अपने देशवासियों को किसकी उन्नति पर बल दिया है?

उत्तर- अपनी तथा अपने देश की उन्नति पर बल दिया है।

(v) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किसका भरोसा न करने को कहा है?

उत्तर- परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा न करने को कहा है।

(1) इस अभागे आलसी देश में जो कुछ हो जाय वही बहुत है। हमारे हिन्दुस्तानी लोग तो रेल की गाड़ी हैं। यद्यपि फर्स्ट क्लास, सेकेण्ड क्लास आदि गाड़ी बहुत अच्छी-अच्छी और बड़े-बडे महसूल की इस ट्रेन में लगी हैं पर बिना इंजिन ये सब नहीं चल सकतीं, वैसे ही हिन्दुस्तानी लोगों को कोई चलाने वाला हो तो ये क्या नहीं कर सकते। इनसे इतना कह दीजिए "का चुप साधि रहा बलवाना" फिर देखिए हनुमान जी को अपना बल कैसा याद आता है। सो बल कौन याद दिलावै।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिन्दी के 'गद्य-खण्ड' में संकलित 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है। इसके लेखक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - रेखांकित अंश की व्याख्या-भारतेन्दु जी कहते हैं कि यह देश का बड़ा दुर्भाग्य है कि भारतवासियों में विविध प्रकार में गुणी तथा सभी प्रकार की योग्यता रखने वाले लोग हैं, परन्तु वे सही नेतृत्व के अभाव में अभी तक अपनी उन्नति नहीं कर सके हैं। हमारे देश

के लोगों का रेलगाड़ी की संज्ञा दी जा सकती है। जैसे रेलगाड़ी में ऊँचे किराये तथा सामान्य किराये के डिब्बे लगे रहते हैं, परन्तु इंजन के अभाव में वे सभी अपनी जगह स्थिर रहते हैं, आगे नहीं बढ़ पाते; उसी प्रकार भारत के लोगों में भी उच्च और मध्यम श्रेणी के विद्वान्, वीर पर्व शक्ति-सम्पन्न सभी प्रकार की प्रतिभाओं से सम्पन्न लोग हैं, परन्तु नेतृत्वहीनता के कारण वे अपनी उन्नति के लिए स्वयं कोई भी कार्य नहीं कर पाता यदि भारतीयों को सही मार्गदर्शक की सत्प्रेरणा प्राप्त हो जो उन्हें उनके बल, पौरुष और ज्ञान का स्मरण दिला सके, तो वे कठिन-से-कठिन और बड़े-से-

बड़े कार्य को भी आसानी से कर सकते हैं। मात्र एक नेता के अभाव में उसकी सारी शक्ति, ज्ञान और योग्यता व्यर्थ हो जाती है।

(iii) लेखक ने देश के लोगों को किसकी संज्ञा दी है? कारण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- लेखक ने देश के लोगों को रेलगाड़ी की संज्ञा दी है क्योंकि जिस प्रकार से रेलगाड़ी में ऊँचे किराए तथा सामान्य किराए के डिब्बे लगे रहते हैं किन्तु सभी इंजन के अभाव में अपनी जगह स्थिर रहते हैं उसी प्रकार देश के लोगों की स्थिति है। वे भी नेतृत्वहीनता के कारण उन्नति नहीं कर सकते।

(iv) "का चुप साधि रहा बलवाना" इस लोकोक्ति के माध्यम से लेखक किस बात को स्पष्ट करना चाहता है?

उत्तर- "का चुप साधि रहा बलवाना" लोकोक्ति के माध्यम से लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि देश के लोग हनुमान जी की तरह हैं। जामवंत ने जिस प्रकार हनुमान जी को उनकी शक्ति का स्मरण कराया और वे समुद्र लाँघ गए, उसी प्रकार भारत के लोगों को प्रेरणादायी, सफल नेतृत्व की आवश्यकता है।

(v) प्रस्तुत गद्यांश का आशय अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त गद्यांश का आशय यह है कि हमारे देश के लोग प्रतिभावान एवं सभी प्रकार की योग्यता रखने वाले हैं, किन्तु वे अपनी प्रतिभा से अनभिज्ञ हैं। यदि उनको कोई सही मार्गदर्शक मिल जाए तो वे क्या नहीं कर सकते ! अर्थात् वे सब कुछ कर सकते हैं। प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक देशवासियों को स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा प्रदान करता है।